कुँवर नारायण

कविता की ज़रूरत

बहुत कुछ दे सकती है कविता
क्यों कि बहुत कुछ हो सकती है कविता
    ज़िंदगी में
        अगर हम जगह दें उसे
जैसे फूलों को जगह देती हैं पेड़
जैसे तारों को जगह देती है रात

हम बचाये रख सकते हैं उसके लिए
अपने अन्दर कहीं
    ऐसा एक कोना
जहाँ ज़मीन और आसमान
जहाँ आदमी और भगवान के बीच दूरी
    कम से कम हो ।

वैसे कोई चाहे तो जी सकता है
    एम नितान्त कवितारहित ज़िन्दगी
        कर सकता है
    कवितारहित प्रेम

Kunwar Narain was born in 1927 and counts the Lucknow-Ayodhya-Faizabad triangle as his home – though he now lives in Delhi. Much of his poetry is represented in a volume of translations by his son Apurva: but not this one, which is from कोई दूसरा नहीं, 1993.